ESSAY

निर्धारित समय: तीन घंटे Time allowed: Three Hours	DTVF/19(JS)–ESY-**E3**	अधिकतम अंक: 250 Maximum Marks: 250

Name: Ravi Kumar Sihag **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** Awake-19|B001

Center & Date: Delhi 04|08|19 **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 1111762

प्रश्नपत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबंध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएंगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णत: काट दीजिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

	निबंध विषय संख्या (Essay Topic No.)	अंक (Marks)
खंड-A Section-A		
खंड-B Section-B		
सकल योग (Grand Total)		

_____

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)

Evaluator (Signature)

_____

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)

Reviewer (Signature)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।

(Candidate must not write on this margin)

खंड A और B में प्रत्येक से एक विषय चुनकर दो निबंध लिखिये, जो प्रत्येक लगभग 1000–1200 शब्दों का हो: **125 × 2 = 250**

Write TWO Essays, choosing ONE from each of the Section A and B, in about 1000–1200 words each: **125 × 2 = 250**

खंड–A / SECTION–A

1. प्रौद्योगिकी वह सशक्त साधन है जो उम्मीद और अवसर के बीच की दूरी तय करता है।
   Technology is that powerful tool which covers the distance between hope and scope.
2. अन्नदाता का उद्धार किसी दया में नहीं बल्कि नवाचार में है।
   Farmer's emancipation lies in innovation rather than mercy.
3. भारत के वे अनिवार्य सामाजिक परिवर्तन जिन्हें आप आगामी कुछ दशकों में होता देखना चाहेंगे।
   The necessary social changes that you wish to see in India in the next few decades.
4. पारंपरिक मूल्यों के साथ आधुनिक विश्व की समस्याओं का समाधान तलाशती भारतीय विदेश नीति।
   India's foreign policy: Exploring solutions to the problems of the modern world with traditional values.

खंड–B / SECTION–B

1. सर्वोच्च शिक्षा वह है जो सिर्फ हमें जानकारी नहीं देती अपितु प्रकृति के साथ हमारे सह-अस्तित्व को भी सुनिश्चित करती है।
   The best education is that which not only gives us information, but also ensures our coexistence with nature.
2. राजनीति में आदर्श अपेक्षित भी है और उपेक्षित भी।
   Ideals in politics are required as well as neglected.
3. समान के साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिये और असमान के साथ असमान।
   Equals should be treated equally and unequals unequally.
4. उस समाज में स्वतंत्रता अर्थहीन है, जिसमें गलती करने की आज़ादी न हो।
   Liberty is meaningless in that society where there is no freedom to commit mistakes.

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

खंड–A / SECTION–A

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1. प्रौद्योगिकी वह सशक्त साधन है जो उम्मीद और अवसर के बीच की दूरी तय करता है।
Technology is that powerful tool which covers the distance between hope and scope.

2. अन्नदाता का उद्धार किसी दया में नहीं बल्कि नवाचार में है।
Farmer's emancipation lies in innovation rather than mercy.

3. भारत के वे अनिवार्य सामाजिक परिवर्तन जिन्हें आप आगामी कुछ दशकों में होता देखना चाहेंगे।
The necessary social changes that you wish to see in India in the next few decades.

4. पारंपरिक मूल्यों के साथ आधुनिक विश्व की समस्याओं का समाधान तलाशती भारतीय विदेश नीति।
India's foreign policy: Exploring solutions to the problems of the modern world with traditional values.

"अन्नदाता का उद्धार किसी दया में नहीं बल्कि नवाचार में है।"

"हलाल-ए-रोजी का दाल किसान से यही पसीना बन कर बदन से लहु निकलता है"

रोजी-रोटी पाने के लिये कोई व्यक्ति किस हद तक जा सकता है? किसान से पूछिये। सबसे पहले तो ज़मीन चाहिये। अगर ठीक-ठाक हुई तो भला, नहीं तो प्रेमचन्द के उपन्यास के नायक 'होरी' की तरह बड़े किसानों, जमींदारों की खुशामद करो, बेगार करो, काश्तकारी करो। वह भी की तो क्या? बीज, खाद, कीटनाशकों का प्रबंध! कैसे? अरे लो-वह भी कठिन शर्तों पर सूदखोर से। चलो लड़-मरकर ये

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

दुविधा भी पार की तो भी गला नहीं छूटेगा। अब पानी के लिये इन्द्रदेव से मन्नते मांगो, पूजा-अर्चना करो। इन्द्रदेव प्रसन्न नहीं हुए तो समझो 'आगे कुआँ' मगर कुछ ज्यादा ही प्रसन्न हो गये तो बाद के रूप में 'पीछे खाई' की स्थिति। ऊपर से खरपतवारों का झंझट अलग। चलो मान लिया यहाँ तक भी सही चला पर 'बकरे की मां कब तक खैर मनायेगी'। फसल पकी, चेहरे पर मुस्कुराहट आई ही थी के साथ में बादल भी आसमान पर मंडरा लिये। अनाज निकलने तक साँस गले में अटकी रही। दाने लाये घर में कि साहूकार ने फण फैला लिया; यहाँ से गला छूटा तो फसल बेचने कैसे जायें? साधन तो है ही नहीं। जैसे-तैसे मण्डी पहुँचे तो पता चला के भाव गिर गये। अशिक्षित किसानों को देख बिचौलियों की आँखे ललचाई। अपनी जेब गर्म करने को उन्होंने कारेल बना कर गरीब किसान को मूंड लिया। अन्ततः क्या बचा? वही खाने को दाने; वही यथास्थिति; वही घर का रास्ता जिसपर पर लदके हुए मुंह को लेकर चलता किसान यह सोच रहा है कि जो

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उसके बच्चे खिलानों, साइकिल, किताबों के लिये फसल बिकने का इंतजार कर रहे थे, उनको क्या जवाब दे? पत्नी को साड़ी तो मां को दवा का वचन दिया था कैसे पूरा करे? इसी ऊहापोह में नज़र जाती है मजबूत गठीली रस्सी पर जो उस जैसे चार किसानों का वजन सह सकती है। अपने इस गरीबी, भूख, अकाल व व्यवस्था के दमनात्मक चक्र से मुक्ति पाने को वह उस रस्सी का फंदेनुमा चक्र बनाकर झूल जाता है व काम आता है। मिल गई मुक्ति! सब दर्द खत्म! यहाँ हिन्दी फिल्म 'बॉस' के विलेन का डायलोग याद आता है-

"मौत तो यूँ नाम से बदनाम है
असल तकलीफ तो जिंदगी देती है"

उपर्युक्त विस्तृत पंक्तियाँ केवल ख्याली पुलाव नहीं बल्कि भारतीय कृषि व कृषकों की भयंकर स्थिति है। बरसों पहले 'ई एम्मोंस' ने कहा था - 'कृषि सभ्यता है', यदि वे आज के किसान की दशा देखते तो शायद ये वाक्य बदल लेते। क्या कारण है कि आजादी

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

के 70 वर्ष बीत जाने पर भी किसानों की दशा में वैसा सुधार न आया जो अपेक्षित था। संविधान निर्माताओं ने सामाजिक व आर्थिक न्याय के जो सपने देखे थे वे पूरे नहीं हुए। फिल्मों के स्तर पर भी 1952 में आई 'दो बीघा ज़मीन', 1967 की 'उपकार' हो या 2001 की 'लगान' हो - सभी में वही स्थितियाँ बदले स्वरूप में नज़र आती हैं। पीपली लाइव (2009) जैसी फिल्में तो किसान आत्महत्या पर राजनेताओं व मीडिया की क्रूरता व असंवेदना पर कटाक्ष करती हैं। सरकारी आँकड़ों में भी जहाँ कृषि उत्पादन के आधिक्य की बात की जाती है; न्यूनतम समर्थन मूल्य बढ़ाया जाता है; नये-नये प्रोत्साहन पैकेज प्रदान किये जाते हैं; ऋण-माफी की जाती है - मगर इन उपायों का क्या वास्तव में किसान को लाभ मिल पाता है जैसा 'बल्ली सिंह चीमा' ने लिखा है -

"तुम्हारी फाइलों में गाँव का मौसम गुलाबी है
मगर ये आँकड़े झूठे हैं, ये दावा किताबी है।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

इस बात में कोई शक नहीं है कि सरकारों ने किसानों हेतु प्रयास किये हैं। प्रथम पंचवर्षीय योजना से लेकर हरित क्रान्ति के रास्ते बीस सूत्री कार्यक्रमों से सहारा लेकर स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना; मनरेगा आदि योजनाएँ हो या हालिया प्रधानमंत्री किसान योजना, अन्नदाता आय संरक्षण योजना, किसानों की आय 2022 तक दुगुनी करने की नीति, न्यूनतम समर्थन मूल्यों में वृद्धि करना जैसे अनेक उपाय सरकारों ने किये हैं। बीज से लेकर बाजार तक की शृंखलाओं में सरकार ने हस्तक्षेप कर सरकार ने संस्थाएँ स्थापित की। ऋण के लिये नाबार्ड बैंक बनाया तो ब्याज सहूलियत भी दी; अनेक सब्सिडियाँ आज भी किसानों को राहत पहुँचाती हैं। राजीव गांधी काल हो या 2008 का समय; इसके साथ साथ हालिया समय में कृषि ऋण माफी पर हजारों करोड़ खर्च किये गये। किन्तु फिर भी अनेक सरकारी रिपोर्टों में किसानों की खस्ता हालत क्यों है? क्या यह धन की कमी का कारण है या राजनीतिक इच्छाशक्ति का?

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

क्या इसमें रणनीतिक भूले जिम्मेदार है या किसान की यथास्थितिवादी मानसिकता ? इन प्रश्नों पर विचार करना ही होगा।

यह बात सही है कि सरकारों के अभी तक के प्रयास किसान को एक पिछड़े हुए वर्ग के रूप में मानकर किये जा रहे थे लेकिन चूँकि 2022 तक किसान आय दोगुना करने का विचार कर सरकार कर रही है तो इसके लिये आवश्यक है कि नीतिगत स्तर हो या संस्थागत स्तर; सरकारी स्तर हो या किसान के निजी स्तर पर हमें कुछ मूलभूत प्रयास करने ही होंगे। किसानों की इस निराशाजनक परिस्थिति में हमें महात्मा चेतना द्वारा नये दृष्टिकोण व रणनीतिक दृष्टि की तरफ बढ़ना ही होगा। जैसा कि मैथिली-शरण गुप्त जी ने कहा है -

"प्राचीन बातें ही भली है, यह विचार अलीक है,
जैसा व्यवस्था हो जहाँ, वैसी व्यवस्था ठीक है।"

इस नवाचारी रणनीति का सबसे पहला उपाय किसान को देखने का नज़रिया होना चाहिये। उदाहरण के लिये कृषि को एक

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

पिछड़ा हुआ व जड़ता युक्त क्षेत्रक न मानकर इसे उद्यम के रूप में मानना होगा। किसान के स्तर पर भी गरीब, अमीर, प्रथम जैसे वर्गीकरण के बजाय 'आकांक्षी, मेहनती, सुस्थापित' जैसे शब्दों का प्रयोग आवश्यक होगा। ऐसा करने से जहाँ एक ओर तो सरकार का नज़रिया परिवर्तित होगा वहीं दूसरी ओर किसान के आत्मसम्मान व आत्ममूल्य में भी वृद्धि होगी।

दूसरे स्तर पर हमें 'संस्थागत स्तर पर नवाचार' करने होंगे। हालिया अशोक दलवई समिति ने भी कृषि मंत्रालय में, कृषि आगत, विपणन, बाजार आदि के लिये पृथक विभागों के गठन व उनके आपसी समन्वय की वकालत की थी। इस समिति ने यह भी कहा था कि 2022 तक किसान आय दोगुनी करने के लिये कृषि को प्रतिवर्ष 10 से 11 प्रतिशत की वृद्धि दर प्रदर्शित करनी होगी। साथ ही सरकार को कृषि आधारभूत संरचना पर भी लगभग 6.5 लाख करोड़ का खर्च करना होगा। इस हेतु आवश्यक है कि सरकार खर्चों की दशा

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

व दिशा तय करे। निजी-सार्वजनिक सहयोग (PPP) का प्रयोग कर कृषि अवसंरचना में सुधार किये जायें। एक अन्य नवाचारी कदम 'आम बजट' में लैंगिक या जेंडर बजट की तर्ज पर 'कृषि बजट' का निर्माण किया जाये जिसमें 'कृषि में बढ़ते महिला-करण' का तत्व समाहित हो। अन्य स्तर पर अनेक समितियों द्वारा 'अखिल भारतीय कृषि सेवा' या 'अखिल भारतीय ग्रामीण विकास सेवा' के गठन का भी सुझाव दिया है, जिस पर सुधार होना चाहिये।

चौथे स्तर पर नवाचारी कदम कृषि आगतों के स्वरूप में हो सकता है। बीज, खाद, कीटनाशकों के स्तर पर सब्सिडियों के स्तर पर समुचित उपाय किये जायें। बिजली व उर्वरक सब्सिडी के कारण पंजाब, हरियाणा जैसे हरित क्रान्ति क्षेत्रों में जिस तरह से 'भूमि-निम्नीकरण' जैसे परिणाम सामने आये हैं। उससे बचने के लिये सब्सिडी को तर्कसंगत बनाना; सब्सिडी का प्रत्यक्ष लाभ अंतरण; बचे हुए धन को पूर्वी क्षेत्र में

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

हरित क्रान्ति के लिये प्रयोग करना ज़रूरी है। आगतों के युक्तिकरण के लिये मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना एक क्रान्तिकारी कदम है किन्तु इसकी प्रयोगशालाओं की संख्या को बढ़ाकर इस योजना को 'कृषि-जलवायु प्रदेश नियोजन कृषि' (Agro-Climate planning Agriculture) से साथ जोड़ना आवश्यक होगा।

पांचवे स्तर पर फसल कटाई व भंडारण के साथ-साथ बाजारों के स्तर पर नवाचार आवश्यक है। यहाँ पर 'वेयरहाउस रसीदें' व 'ई-नाम' जैसे महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट मौजूद है किन्तु राज्य सरकारों द्वारा पालन न किये जाने पर स्थिति अधिक आशाजनक नहीं है। इसके लिये सहकारी संघवाद की तर्ज पर 'कृषि संघवाद' की संकल्पना अपनाई जाये ताकि कृषकों के लाभार्थ केन्द्र-राज्य सहयोग कर सके।

छठा स्तर जल की ज़रूरतों व उसके उपयोग को लेकर है यहाँ इजराइल जैसे देशों से प्रेरणा लेकर 'जल दक्षता'

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

व जल क्षमाविता को बढ़ाया जाना चाहिये क्योंकि भारत में 60% कृषि शुल्क क्षेत्रों में विद्यमान है। इसके लिये फव्वारा विधि; बूँद-बूँद सिंचाई विधि, सरफेस व सब-सरफेस सिंचाई, जल बजट जैसे प्रयोगों के साथ-साथ जनभागीदारी के द्वारा हीरे चेक डैम का पुनर्नवीकरण आवश्यक होगा। बुंदेलखण्ड के मजिस्ट्रेट द्वारा मनरेगा के फंड का प्रयोग कर वहाँ के चेक बांधों का पुनर्नवीकरण वाटरशेड विकास के साथ जन-भागीदारी का उत्कृष्ट उदाहरण है जो हालिया सरकार की 'प्रति-बूंद अधिक फसल' की रणनीति से साम्य रखती है।

अन्य स्तरों पर भूमि-जोतों का डिजीटलीकरण करना, कृषि यंत्रीकरण के स्तर पर 'हैप्पीसीडर' जैसे नवाचारी प्रयोगों के साथ-साथ महिला किसानों हेतु यंत्रों को विकसित किया जाये क्योंकि 'कृषि के नारीकरण' की बढ़ती प्रवृत्ति हेतु एर्गोनॉमिकली डिजाइन किये हुए यंत्र ज़रूरी है। इसके लिये मध्यप्रदेश की भाँति कृषि यंत्रों के बैंक का विकास किया जा सकता है। अन्य

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

स्तरों पर जलवायु परिवर्तन के प्रति कृषि की संवेदनशीलता में कमी करने हेतु 'क्लाइमेट स्मार्ट एग्रीकल्चर'; जैविक खेती; जीरो बजट प्राकृतिक कृषि; इसरो का ड्रोन के प्रयोग से 'सेंसर एग्री प्रोजेक्ट' व कृत्रिम बुद्धिमत्ता व मशीन लर्निंग के साथ प्रिसिज़न फार्मिंग (Precision farming) जैसे प्रयोग भी स्वागत योग्य है जिन पर भविष्य में काम किया जाना चाहिये। साथ ही स्टार्ट-अप के क्षेत्र में कृषि स्टार्ट-अप को प्रोत्साहन देना चाहिये।

इस प्रकार विभिन्न समितियाँ हो या स्वामीनाथन जी की अध्यक्षता वाला किसान आयोग - सभी की सिफारिशों का सार यही है कि हमें कृषि में आमूल-चूल बदलाव यदि करने हैं तो इस हेतु आवश्यक है कि हम अपना नज़रिया बदलें; रणनीति बदले; तकनीक बदलें व योजना बदलें। इसका कारण यह है कि भारतीय किसान में मेहनत की कमी नहीं है। कमी है तो बस उचित दिशा व

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

राह दिखाने की; उचित कृषि प्रसार सेवा (Agri culture extention) के साथ मोबाइल व डिजीटल तकनीक के प्रयोग द्वारा किसान को जागरुक करने की। यदि ऐसा संकल्प राजनीतिक प्रशासनिक व नागरिक इच्छाशक्ति द्वारा करने में यदि हम सफल हो जाते हैं तो वह दिन दूर नहीं जब भारत का किसान अपने बेटे या बेटी को किसान बनाना चाहेगा; ~~अब~~ प्रेमचन्द यदि अपना 'गोदान' दोबारा लिखेंगे तो उसमें होरी' अन्तत! मरेगा नहीं व प्रधानमंत्री के सपने के अनुसार किसान अपनी आय दोगुनी कर 'नये भारत के निर्माण' का भागी बनेगा। बस इसके लिये सिर्फ अथक व उचित दिशा के प्रयास ज़रूरी है। जैसा कि एक कवि ने कहा है-

"इस पथ का उद्देश्य नहीं है
श्रान्त स्वन में टिक रहना,
बल्कि पहुँचना उस सीमा तक
जिसके आगे राह नहीं।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

खंड–B / SECTION–B

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1. सर्वोच्च शिक्षा वह है जो सिर्फ हमें जानकारी नहीं देती अपितु प्रकृति के साथ हमारे सह-अस्तित्व को भी सुनिश्चित करती है।
The best education is that which not only gives us information, but also ensures our coexistence with nature.

2. राजनीति में आदर्श अपेक्षित भी है और उपेक्षित भी।
Ideals in politics are required as well as neglected.

3. समान के साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिये और असमान के साथ असमान।
Equals should be treated equally and unequals unequally.

4. उस समाज में स्वतंत्रता अर्थहीन है, जिसमें गलती करने की आज़ादी न हो।
Liberty is meaningless in that society where there is no freedom to commit mistakes.

"समान के साथ समान व्यवहार किया जाना चाहिये और असमान के साथ असमान।"

"समय मांगता है मुझसे हिसाब,
पढ़े क्यों नहीं, नहीं है इसका जवाब मेरे पास,
तुमने अपनी वर्जनाओं से,
काटी थी मेरी जिह्वा,
मेरे होठ ही सिल दिये थे,
मेरे कानों में जलता शीशा भी उड़ेल दिया था,
तुम्हारी इस करनी पर,
मेरी धमनियों में खौल रहा है दौड़ता लहू,
समय के साथ इसका भी मैं दूँगा माकूल जवाब,
मेरी जगह पढ़ेंगे मेरे बच्चे ज़रूर।"

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

दलित विमर्श के लेखकों द्वारा लिखी गई ये पंक्तियाँ समाज के उस नग्न यथार्थ को उघाड़ती है जो बरसों से हमारे समाज में मौजूद रहा है। अपने आस-पास के परिवेश पर नज़र डालते पर हम पाते हैं कि सरकारी नौकरी के स्तर पर विभिन्न श्रेणियों में आरक्षण का प्रावधान है। स्थानीय निकायों के चुनावों में महिलाओं व अन्य श्रेणियों को न्यूनतम एक निर्धारित आरक्षण रूपी वरीयता दी जाती है। बसों, ट्रेनों में कुछ सीटें महिला, वृद्धों, विकलांगों के लिये आरक्षित रहती है। आम बोलचाल की भाषा में महिलाओं को तरजीह देने के लिये 'लेडीज़ फर्स्ट' जैसे मुहावरे प्रचलित है। क्यों दान सिर्फ गरीबों को दिया जाता है, अमीरों को नहीं? क्या उपर्युक्त सारे मामले समानता के अधिकार का उल्लंघन नहीं है? क्या समानता जैसे मूल्य भी पूर्णतः निरपेक्ष या अपवादरहित नहीं होते? इस प्रकार के अपवादों का औचित्य क्या है? और साथ ही, इनका समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है? इन

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

सभी सवालों के जवाब माकूल विश्लेषण द्वारा ही दिये जा सकते हैं।

दरअसल, निबंध की विषयवस्तु में समानता के जिस मूल्य की बात की जा रही है उसका विकास आधुनिक युग में हुआ है। प्राचीन समय में जहाँ यूनान में देवता - मानव; स्त्री-पुरुष; मालिक-दास जैसी अनेक श्रेणियाँ प्रचलित थी वहीं भारत में भी वर्णव्यवस्था के विकृत रूप 'जाति-व्यवस्था' के कारण एक ओर मनुष्यों में 'श्रेणीक्रम' विद्यमान था वहीं नर-नारी में भी असमानता विद्यमान थी। यह व्यवस्था प्राचीन से मध्यकालीन सामंती समाज में 'द्रौपदी के चीर' की भाँति बढ़ती रही किन्तु आधुनिक युग में जॉन लॉक, बेंथम जैसे उपयोगितावादी विचारकों; कार्ल मार्क्स जैसे विचारकों ने समानता पर विचार किया तो वहीं फ्रांसिसी, अमेरिकी क्रान्तियाँ भी इसी मूल्य हेतु पूर्ण हुई। आगे चलकर डायसी ने 'विधि के शासन' की संकल्पना दी जिसके

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति के लिये एक समान व्यवहार की परिकल्पना की गई। यही व्यवस्था अमेरिकी दर्शन 'विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया' के साथ 'कानून के समक्ष समता' (equality before Law) के बजाय ~~न्याय~~ कानून द्वारा संरक्षित समता (equality protected by Law) जैसे विचार उद्धृत हुए। भारतीय संविधान में भी अनुच्छेद 14 से लेकर अनुच्छेद 18 तक इसी सिद्धान्त का अनुसरण किया गया है।

सैद्धान्तिक, दार्शनिक व ऐतिहासिक पक्ष पर चर्चा करने के बाद मूल प्रश्न यह है कि असमान के साथ असमान व्यवहार क्यों किया जाये? दरअसल इस प्रश्न का उत्तर डॉ० भीमराव अम्बेडकर जी ने अपनी संविधान सभा की बहसों में दिया है। उनके अनुसार यदि हम एक समतामूलक समाज चाहते हैं तो सकारात्मक भेदभाव अत्यन्त आवश्यक है। उन्होंने तर्क दिया कि यदि हम समावेशी व उन्नत-प्रगतिशील लोकतंत्र चाहते हैं तो पिछड़े वर्गों (मुख्यतः अनुसूचित जाति व जनजाति) को

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

विभिन्न स्तरों पर प्रोत्साहित करना होगा। उनके अनुसार चुंकि उनके साथ इतिहास में विभिन्न स्तरों पर भेदभाव रहा है अतः इसकी पूर्ति के लिये ऐसा व्यवहार आवश्यक है। दूसरे स्तर पर उन्होंने कहा कि इतने समय के इतिहास में समस्त राजनीतिक, प्रशासनिक, सामाजिक, शैक्षिक संस्थाएँ भी उच्च वर्गों के पक्ष में स्थापित हो जाती हैं। इन संस्थाओं में असमान या निम्न वर्ग के प्रति पूर्वाग्रह भी विद्यमान हो सकते हैं। अतः निम्न या पिछड़े वर्गों का विकास तभी होगा जब वे राजनीतिक भागीदारी करें या नीति-निर्माण में सहयोग करें।

तीसरे स्तर पर असमान ~~भेदभाव~~ व्यवहार का कारण पिछड़े वर्ग को शिक्षित करना है, क्योंकि कोई भी कानून या आदेश तब तक प्रभावी नहीं होगा जब तक उसे प्रभावी बनाने व उपयोग में लेने की मांग निचले तबके द्वारा नहीं की जायेगी। अतः इस जड़ता, अजागरूकता की स्थिति को शिक्षा के द्वारा ही तोड़ा जा सकता है। संस्कृत में

ठम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

पंक्ति है - 'या विद्या सा विमुक्तये' - अर्थात् वही विद्या व्यक्ति को मुक्त करती है यह इसी बात का परिचायक है।

इसी प्रकार ये सभी तर्क हर असमान व्यवहार पर लागू होते हैं महिलाओं को विभिन्न संस्थानों में दिये जा रहे आरक्षण बरसों की उनकी जकड़न, कैद, अत्याचारों की प्रतिपूर्ति का एक तरीका मात्र है। साथ ही राजनीतिक भागीदारी द्वारा जहाँ एक ओर उनमें स्वयं मूल्य की भावना विकसित होती है वहीं दूसरी ओर नीति - निर्माण में भागीदारी से वे ग्रामीण या शहरी महिलाओं की समस्याओं का निदान भी अधिक प्रभाव-शाली तरीके से कर सकती है। इसका कारण है कि 'संवेदना' चाहे कितनी भी गहरी हो स्वयं वेदना' के समझा नहीं हो सकती।

इसी प्रकार विकलांग हो चाहे मानसिक रूप से विक्षिप्त; बच्चे हो या वृद्ध सभी के लिये सरकारें द्वारा विभिन्न पेंशन योजना, आय समर्थन योजना; आरक्षण व मुक्त सेवाओं का प्रावधान करती है तो इसके

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

मूल में यही भावना ~~छिपि~~ छिपी होती है कि प्राकृतिक अन्यायों की भरपाई के लिये कानूनी रूप से मानवतावादी कदम उठाया जाये क्योंकि महात्मा गांधी भी कहा करते थे कि - 'हर मनुष्य साध्य है, साधन नहीं'।

अतः हर मनुष्य को गरिमापूर्ण जीवन व समतामूलक समाज देने के लिये इस प्रकार के उपाय आवश्यक है। हिन्दी कवि सुमित्रानंदन पंत ने भी नारी दशा में सुधार के लिये लिखा है -

"योनि नहीं है रे नारी,
वह भी मानवी प्रतिष्ठित,
उसे तुम स्वतंत्र करो,
वह रहे न नर पर अवसित।"

अंतिम प्रश्न यह है कि इस प्रकार के असमान व्यवहार या सकारात्मक भेदभाव का औचित्य क्या है? क्या ऐसा व्यवहार करना समानता के व्यवहार के विरुद्ध नहीं है। नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन ने अपनी अनेक पुस्तकों में यह विवेचित किया

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

है कि वास्तविक मानव विकास या समावेशी विकास 'क्षमता-निर्माण' व अवसरों तथा विकल्पों की बहुलता में है। समानता केवल शब्द नहीं है यह एक मूल्य की प्राप्ति है जिसकी प्राप्ति केवल 'ड्रिप्ल डाउन' या 'टॉप डाउन एप्रोच' द्वारा नहीं प्राप्त की जा सकती है। इसके लिये आवश्यक है कि नीचे से सशक्तिकरण के प्रयास कर 'वन साइज फिट कॉर ऑल' उपागम के बजाय 'बहु-क्षेत्रीय रणनीतियाँ' व 'बॉटम अप' एप्रोच बनाई जाये। आज के समय में जितनी भी समस्याएँ है चाहे वह आतंकवाद की समस्या हो या नक्सलवाद की; आर्थिक असमानता के कारण जन असंतोष हो या नृजातीय संघर्षों की — सभी समस्याओं का एक ही कारण है 'सापेक्षिक वचन' (Relative deprivation) की भावना। इसका तात्पर्य है कि एक समुदाय द्वारा दूसरे समुदाय की तुलना में स्वयं को वंचना की स्थिति में समझना। आजादी के बाद से हमारे

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

देश में चाहे उत्तर-पूर्वी लोगों का आंदोलन हो या नक्सलवाड़ की समस्या। इसका मूल कारण यही रहा कि सरकार द्वारा अन्य विकसित क्षेत्रों का और अधिक विकास किया जबकि अविकसित या पिछड़े क्षेत्रों को अनदेखा कर दिया। परिणाम हुआ हिंसक संघर्ष। इसी प्रकार नक्सलवादी आंदोलन का कारण भी विकास की प्रक्रिया में समुचित व्यवहार न किया जाना था। इसी प्रकार महिला जागरूकता आंदोलन, पर्वतीय क्षेत्रों के पर्यावरणीय आंदोलन हो या नये राज्यों की मांग (गोरखालैंड आदि) — सभी का प्रमुख कारण 'समानता' के मूल्य की उचित तरीके से स्थापना न कर पाना है। कई आलोचकों व विश्लेषकों द्वारा परिकल्पना भी की जाती है कि यदि अंबेडकर जी नहीं होते तो नक्सलवादी आंदोलन की तीव्रता बहुत अधिक होती व संपूर्ण देश आज 'गृहयुद्ध' का देश बन रहा होता।

अतः इस प्रगतिशील विचार का मूल औचित्य ही समानता स्थापित करना

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

है न कि समानता की राह में अपवाद बनना। क्योंकि अगर हिंसात्मक संघर्ष होते हैं तो उसका परिणाम संपूर्ण व्यवस्था का नाश होगा और यदि हिंसक संघर्ष के द्वारा निचले या असुविधाभोगी वर्ग को सत्ता मिल जाती है तो वह उसी प्रकार की प्रतिशोधात्मक कार्यवाही उन सुविधाभोगी वर्गों के खिलाफ करेगा जैसा कि फ्रांस की क्रान्ति या रूस की क्रान्ति के बाद आभिजात्य वर्ग के लोग फांसी पर चढ़ा दिये गये थे। 'थॉमस पिकेटी' ने भी अपनी हालिया पुस्तक 'कैपिटल इन द ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी' में भविष्य की परेशानियों को दूर करने के लिये बढ़ती असमानता के एक उपाय के रूप में करों की दरों को बढ़ाने (अमीर वर्ग के लिये) की वकालत की है। दिनकर ने भी कहा है-

"जब तक मनुज-मनुज का,
यह सुख भाग नहीं सम होगा।
शमित न होगा कोलाहल,
रण नहीं कम होगा।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

इस प्रकार आज के समय में जहाँ एक ओर 'सतत विकास लक्ष्यों' की प्राप्ति के प्रयास किये जा रहे हैं तो इन सभी लक्ष्यों में एक चीज़ साझी है - वह है 'समता व समावेशन'। यदि इस समावेशी विकास का स्वप्न मूर्त रूप में पूरा होने की इच्छा रखनी है तो पिछड़े, सीमांत व हाशिये पर स्थित लोगों को मुख्यधारा में लाना होगा। उनके लिये विशेष उपाय सृजित करने होंगे। बहुमॉडल जैसे - गांधीजी का ट्रस्टीशिप सिद्धान्त व अंत्योदय से सर्वोदय सिद्धान्त; अमृत्य सेन का क्षमता दृष्टिकोण; महबूब-उल-हक का अवसर व विकल्प बहुलता उपागम; जॉन रॉल्स का न्याय सिद्धान्त आदि का समुचित, संश्लेषित व विवेकपूर्ण उपयोग कर ही हमारे विश्व को एक ओर तो विकास के पथ पर हम अग्रसर कर पायेंगे वहीं दूसरी ओर आज के विश्व के सम्मुख मुंह बाए खड़ी बाधाओं को पार करने के उपाय

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

भी हमें प्राप्त होंगे क्योंकि हिन्दी के प्रसिद्ध कवि दिनकर ने वास्तविक शांति की स्थिति को समता की स्थिति ही कहा है –

"शांति नहीं तब तक जब तक
मनुज-मनुज का सब सम हो
न ही किसी को बहुत अधिक हो
न ही किसी को बहुत कम हो।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation